वेद एवं विश्वशांति

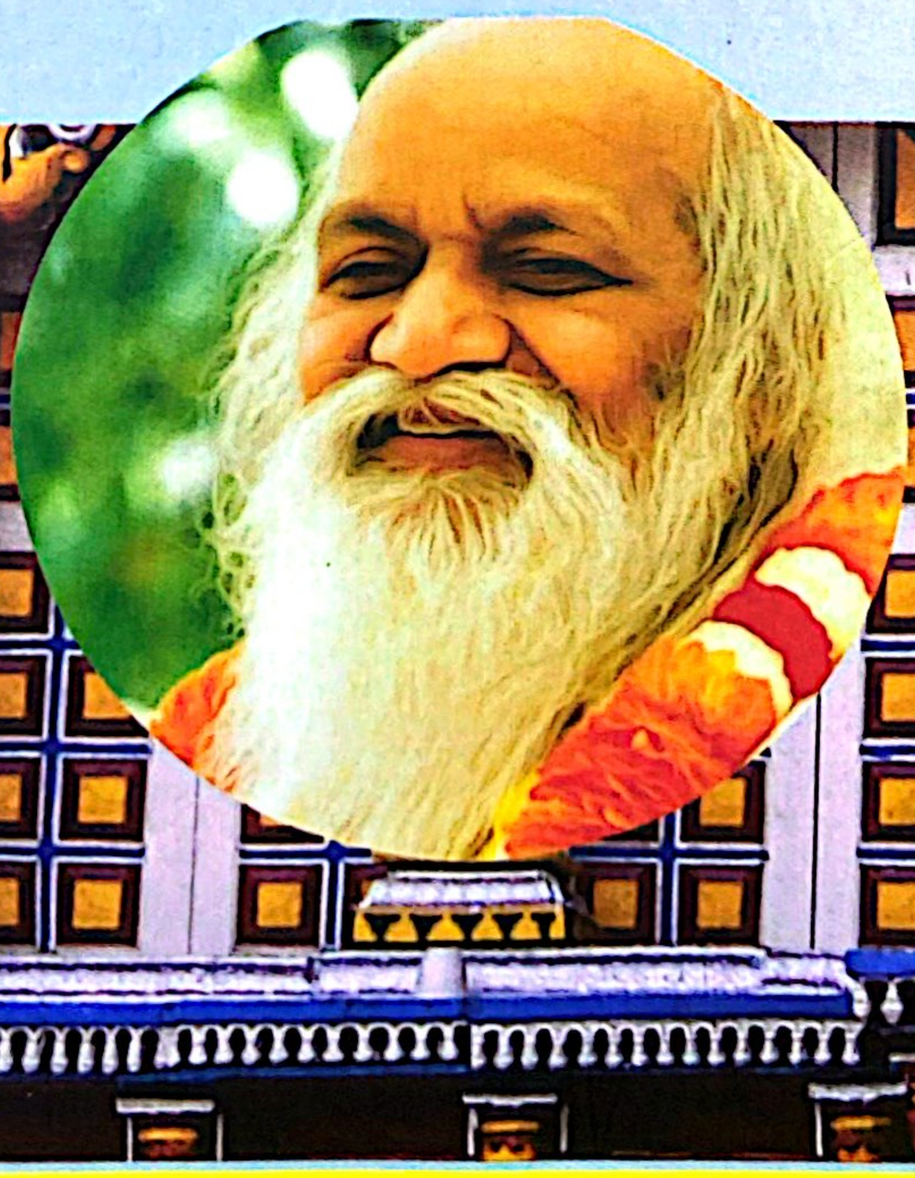

संपादक

डॉ. राजा लुइस अल्वारेज

डॉ. देवी प्रसाद त्रिपाठी

Scanned with CamScanner

PUBLICATION

PUBLICATION

के.बी.डी. पब्लिकेशन
नई दिल्ली-110002
संस्करण : 2024
ISBN- 978-81-960260-2-8

© सम्पादक

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। सम्पादक/लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनः प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

वेद एवं विश्व शान्ति

सम्पादक: राजा लुइस अल्वारेज एवं प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

प्रकाशक

के.बी.डी. पब्लिकेशन

4262/3, प्रथम मंजिल, अंसारी रोड़,
दरियागंज, दिल्ली- 110002
फोन: 011-43580581, 09810611914
Email: kbd.publication@gmail.com

Scanned with CamScanner

10. वेदों में पर्यावरणीय अभिचेतना
- डॉ. मोहिनी अरोरा -168
11. स्थिरता के अनन्त रास्ते : शाश्वत भारतीय ज्ञान और सतत विकास लक्ष्य
- डॉ. प्रतिभा -183
12. वेदकालीन शिल्पी
- डॉ.देशबन्धु -197
13. वेदों में गणितशास्त्र
- डॉ. प्रवेशव्यास -206
14. वैदिक वाङ्मय में ऋतुओं की अवधारणा
- डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा -221
15. वैदिक वास्तु विमर्श
- डॉ. दीपक वशिष्ठ -230
16. वैदिक पर्यावरणीय चिन्तन
- डॉ. नवीन पाण्डेय -238
17. वैदिक मनोविज्ञान का एक अध्ययन
- डॉ. सूर्यमणि भण्डारी -256
18. वैदिक विज्ञानः ब्रह्माण्ड के रहस्यों का अनावरण
- डॉ. अव्यक्त रैना -264

Scanned with CamScanner

वैदिक वास्तु विमर्श

-डॉ. दीपक वशिष्ठ
सहायकाचार्यः वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला.ब.शा. रा. सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

'भूतं भवद् भविष्यच्च सर्वं वेदात् प्रसिद्धयति' मनु की उक्ति हमें बताती हैं कि सब कालों के ज्ञान-विज्ञान वेद से ही सिद्ध होते हैं तथा सभी प्राच्य और पाश्चात्य विद्वान भी यह अङ्गीकृत कर चुके हैं कि सम्पूर्ण विश्व के वर्तमान में उपलब्ध समस्त वाङ्गमय में वैदिक वाङ्गमय ही प्राचीनतम हैं। सम्पूर्ण जगत के लिए परमोपयोगी, प्रामाणिक, महत्वपूर्ण, कल्याणकारक, सत्कर्मप्रवर्तक, मूर्धन्य और अनन्तविज्ञान राशि रुप ऋग-यजु-साम-अथर्व वेद अपौरुषेय हैं। जिनसे मानवोपयोगी चतुर्दश विद्या[1] संगृहीत हुई हैं। अतः वेद अखिल ज्ञान का आधार हैं। वेद को अनुसृत करते हुए जो ज्ञान हैं वो ही हम भारतीयों के लिये प्रमाण स्वरूप हैं। वेद मे निर्दिष्ट ज्ञान को ही अङगीकृत करके सभी शास्त्र रचे गये हैं।[2] जिनमें शिक्षा उच्चारण प्रकार को निर्देशित करती हैं, कल्प कर्मानुष्ठान के स्वरुप को प्रदर्शित करता हैं, प्रकृति-प्रत्यय के ज्ञानपूर्वक तत्व को व्याकरण बताता हैं, निरुक्त वैदिक पदों का निर्वचन करता हैं, उच्चारण की क्या गति हो? छन्द इसका बोध करवाते हैं इसी तरह काल गणना में शुभाशुभ काल का विवेचन ज्योतिष करता हैं। शिक्षा ग्रन्थों में छह प्रकार के अंगों का वर्णन प्राप्त होता है।[3]

भारतीय वास्तुशास्त्र का जन्म भी इन वेदाङ्ग-षट्क (विशेषतः ज्योतिष एवं कल्प) से हुआ हैं। क्योकिं भारतीय वास्तुशास्त्र का आश्रय धर्म रहा हैं, अतः धार्मिक संस्कारों, यज्ञों एवं पूजाओं के सम्बन्ध में आवश्यक भूमि चयन, भू-संस्कार,भूमि के मान और उन्मान एवं वेदी रचना आदि आवश्यकीय अंगों के सम्बन्ध में जो निर्देश तथा विवरण इन

Scanned with CamScanner